एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

Scanned by CamScanner

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-19

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

****

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -18 का शेष (नाटक का मूल पाठ)...]

द्वितीय अंक

****

Scanned by CamScanner

गौतम : तुम आज ही अजातशत्रु को युवराज बना दो और इस भीषण-भोग से कुछ विश्राम लो। क्यों कुमार, तुम राज्य का कार्य मन्त्रि-परिषद् की सहायता से चला सकोगे?

अजातशत्रु : क्यों नहीं, पिताजी यदि आज्ञा दें।

गौतम : यह बोझ, जहाँ तक शीघ्र हो, यदि एक अधिकारी व्यक्ति को सौंप दिया जाए, तो मानव को प्रसन्न ही होना चाहिए, क्योंकि राजन्, इससे

Scanned by CamScanner

कभी-न-कभी तुम हटाए जाओगे; जैसा कि विश्व-भर का नियम है। फिर यदि तुम उदारता से उसे भोगकर छोड़ दो, तो इसमें क्या दुःख-

बिम्बिसार : योग्यता होनी चाहिए, महाराज! यह बड़ा गुरुतर कार्य है। नवीन रक्त राज्यश्री को सदैव तलवार के दर्पण में देखना चाहता है।

(नाटक का शेष मूल पाठ भाग-20 में....)

Scanned by CamScanner